बांग्ला नववर्ष का सुरों से स्वागत

लखनऊ (एसएनबी)। बैसाखी के बीहू गीत व फाल्गुन के जाने के बाद आयी नयी फसल और पेड़ों पर आयी नयी पत्तियों का अहसास दिलाता झारखंड के घाटोनासुर के आदिवासियों का मारंग बुरु तुरु रुरु गीत ने सभी को थिरकने पर मजबूर कर दिया। यह नजारा शनिवार को बंगाली क्लब एवं युवक समिति की ओर से बंगालियों के नववर्ष पर हो रहे सांस्कृतिक कार्यक्रम में देखने को मिला। कार्यक्रम का आयोजन लालकुआं स्थित बंगाली क्लब में हुआ। इस मौके पर मुख्यअतिथि एंटीकरप्शन एडीजी आनंद लाल बनर्जी उपस्थित थे।

▶ बंगाली क्लब में गीत-संगीत ने बांधा समां

समिति के अध्यक्ष डीबी बोस ने बताया कि पहला बैसाख बंगालियों का नववर्ष होता है इसे हम लोग धूमधाम से मनाते है। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में कोलकाता से आये महुल ग्रुप के कलाकारों ने चार चांद लगा दिया। ग्रुप के कलाकार आनंद, पार्थो, सुभो की जोड़ी ने इधर तोर मोरा गांगे, अल्काप गीत केनो साहिब केली लागे, अब्बासुद्दीन का गीत अमार दुखलीरे, निरमलेंदु चौधरी व अंशुमन राय का सोनार चांद बैठेनी धोनी और दादा पाये पोड़ी रे गीत गाकर कार्यक्रम में समा बांध दिया।

इसके बाद चटका गीत कमला सुंदरी ने सभी को अपने ही रंग में रंग लिया। अंत में सभी को देशबेस मिठाई से मुंह मीठा कराया गया। ग्रुप का संचालन पार्थो भौमिक ने किया। कार्यक्रम का संचालन समिति के सचिव अरुण कुमार बनर्जी ने किया।

बंगाली क्लब में नववर्ष पर सांस्कृतिक का…